चक्रव्यूह

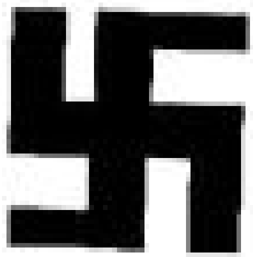


प्रवेशद्वार

१५ यन्त्रम्–

६	१	८
७	५	३
२	९	४

स्वास्तिक–



अथ षोडश मातृका आसनम्

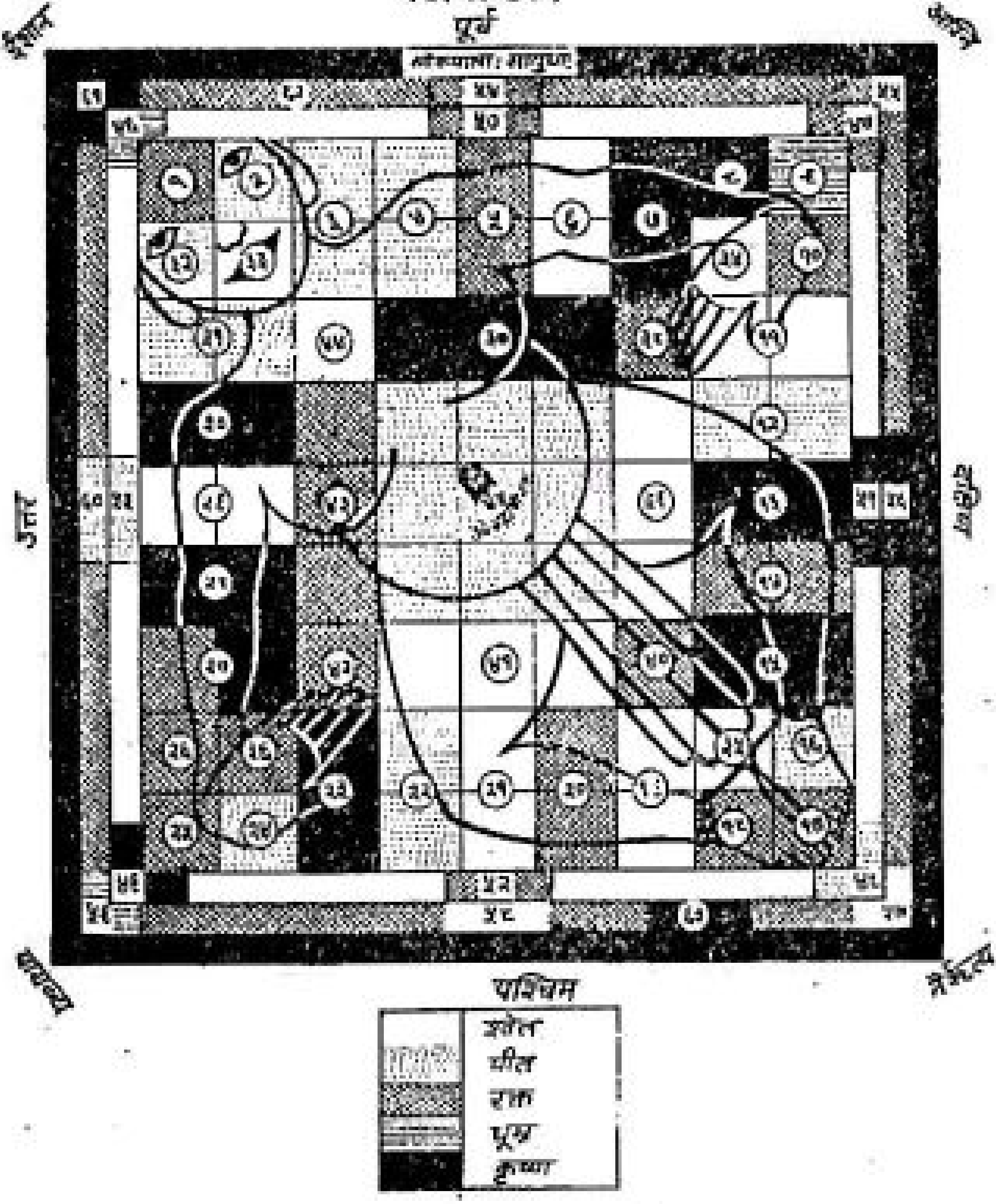
आत्मनः कुल देवताः१६	लोक मातरः १२	देव-सेन ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी + गणेश १

लक्ष्मी ३४ यन्त्रम्

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

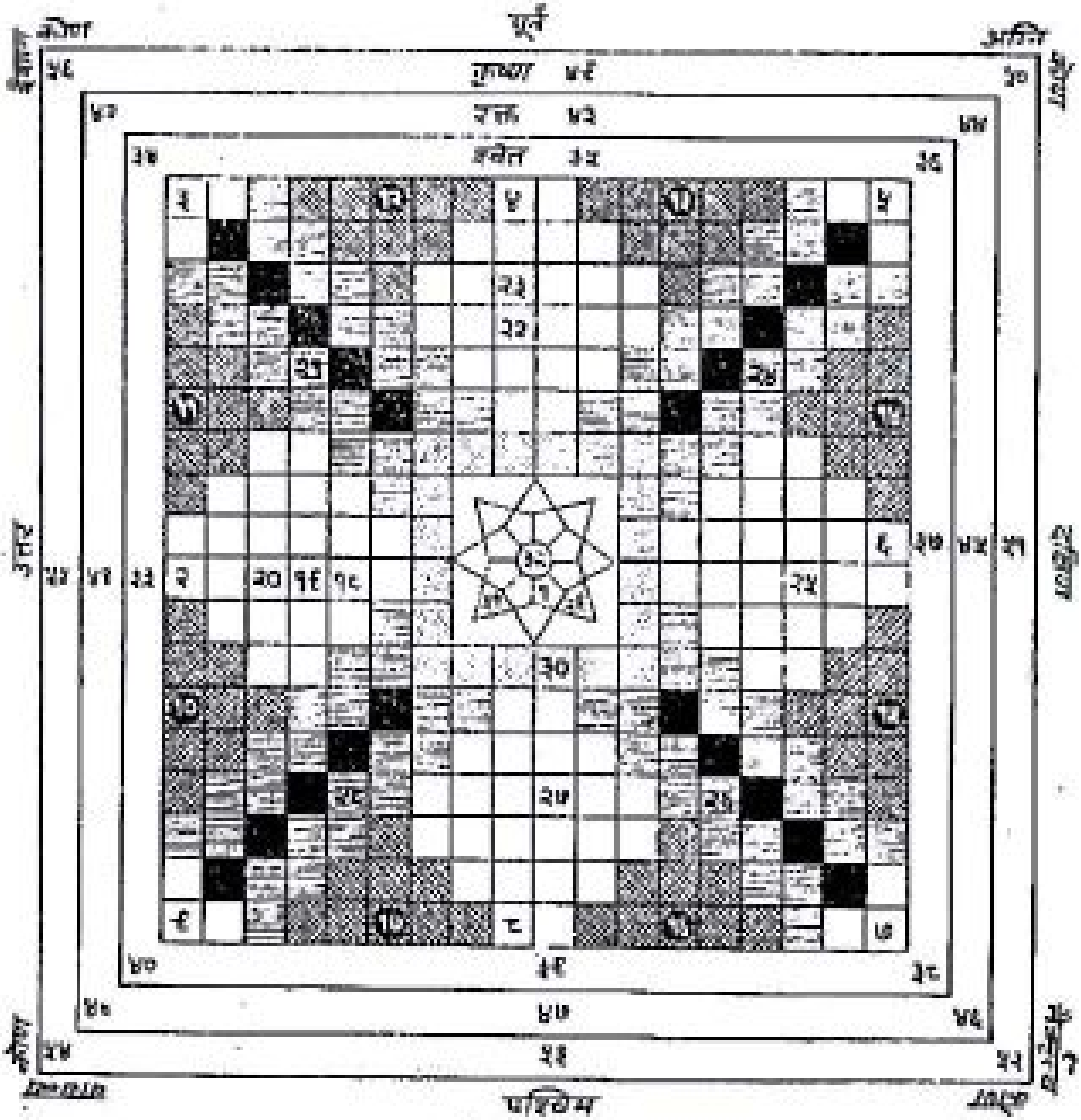
गृहवास्तु चक्रम्

(८१ कोष्ठक)



सर्वतोभद्रचक्रम्

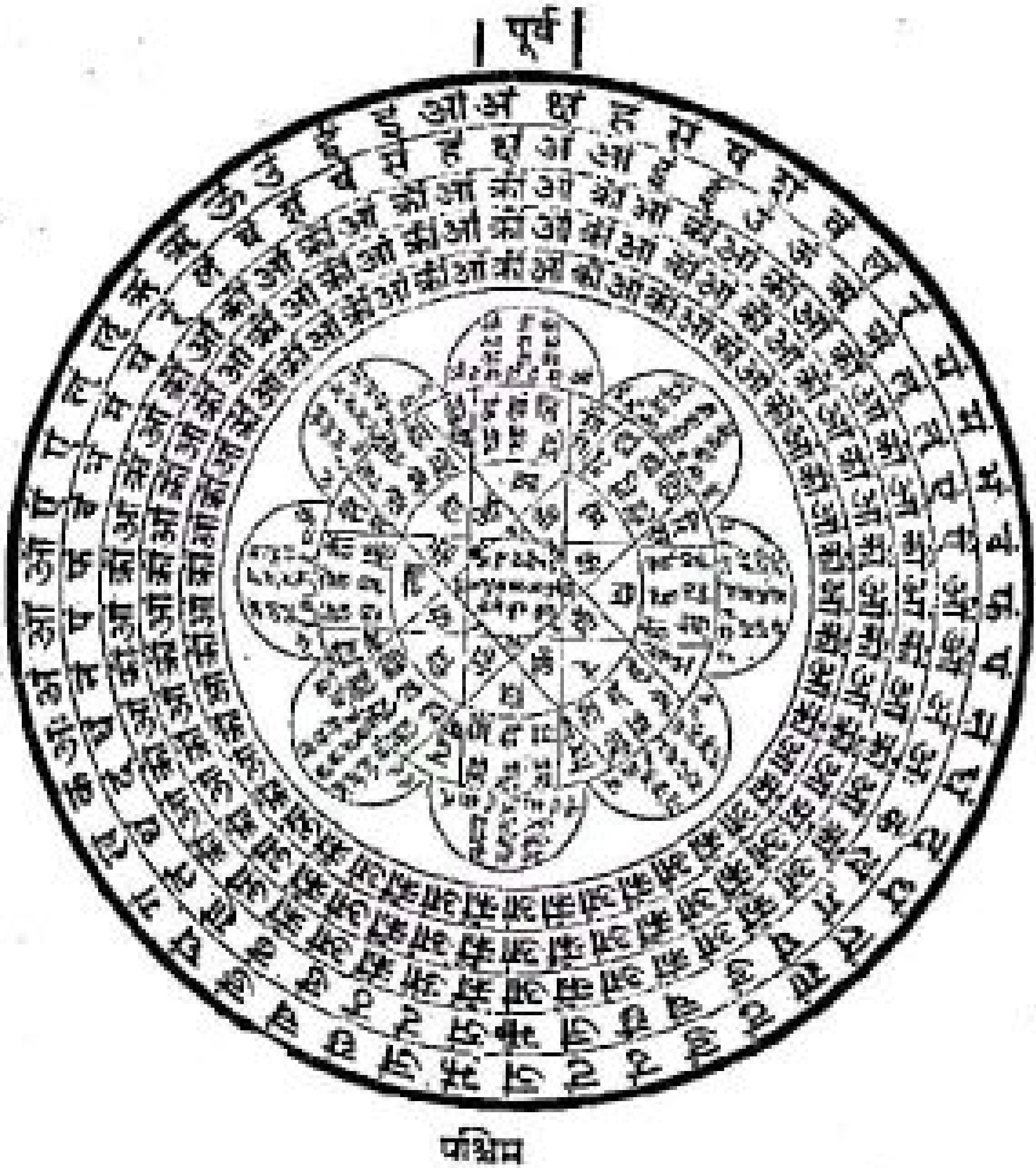
(१९ रेखात्मकम्)



चिह्न वर्ण धान्य

- श्वेत- चावल
- हरित- मूंग
- कृष्ण-उर्द
- पीत-चना
- रक्त-मसूर

घटार्गल-यंत्रम्



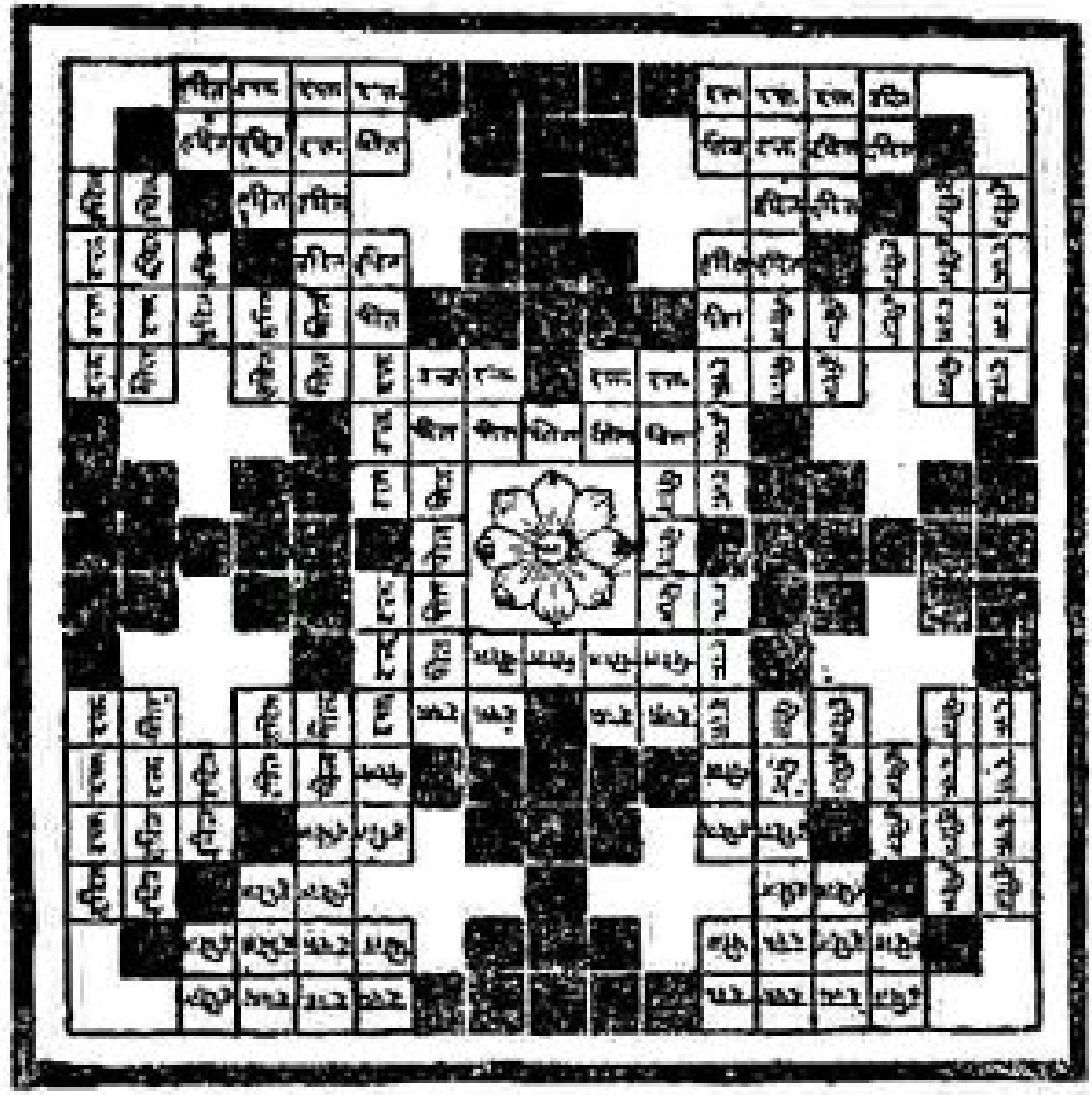
'अग्निकोणे नमः'

इस यंत्र के ऊपर कलश तथा दीपक–स्थापन करना चाहिए।

शारदायां नवमपटले–

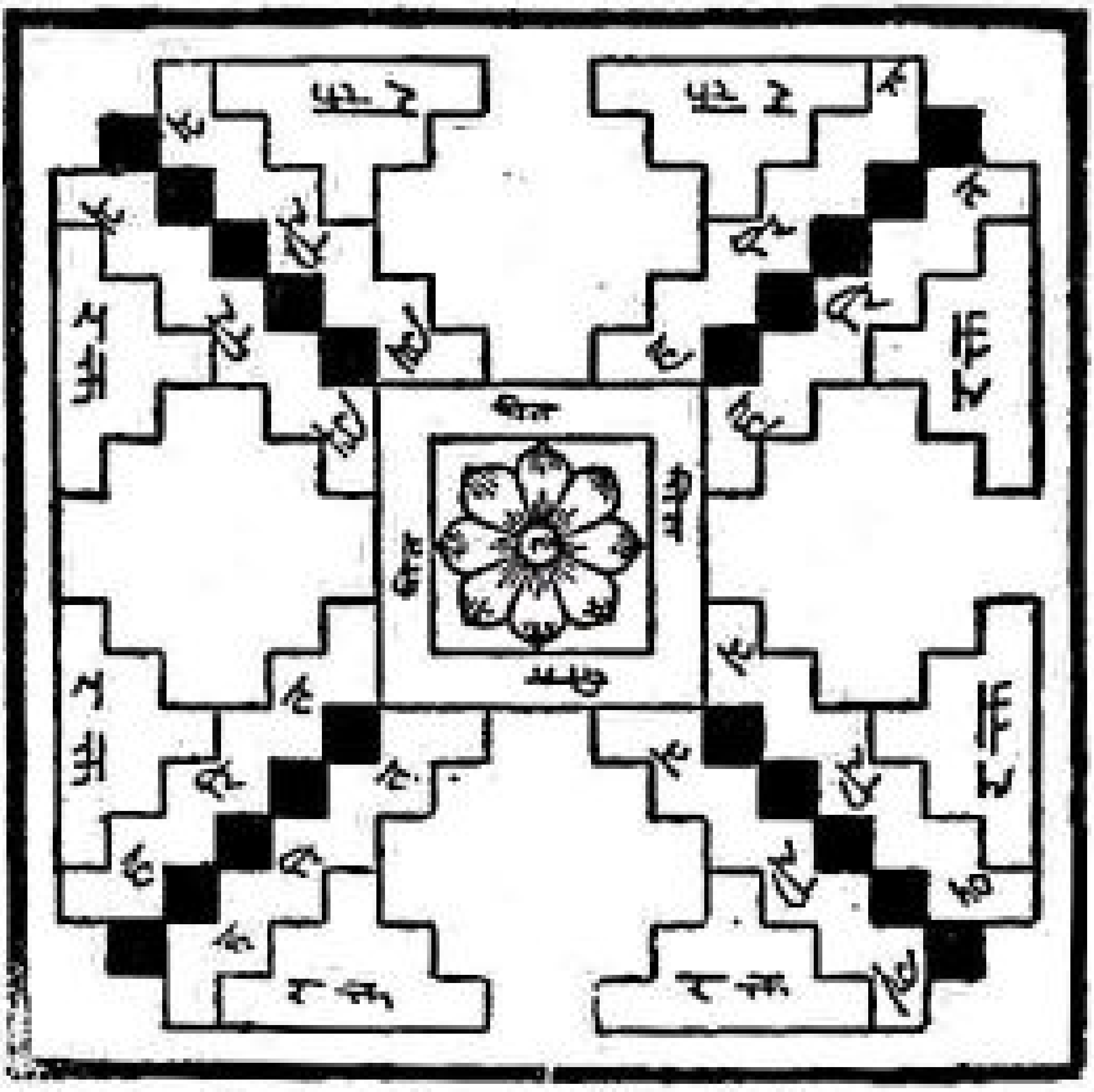
श्लोक ९५ तः, १०० पर्यन्तम्।

चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्



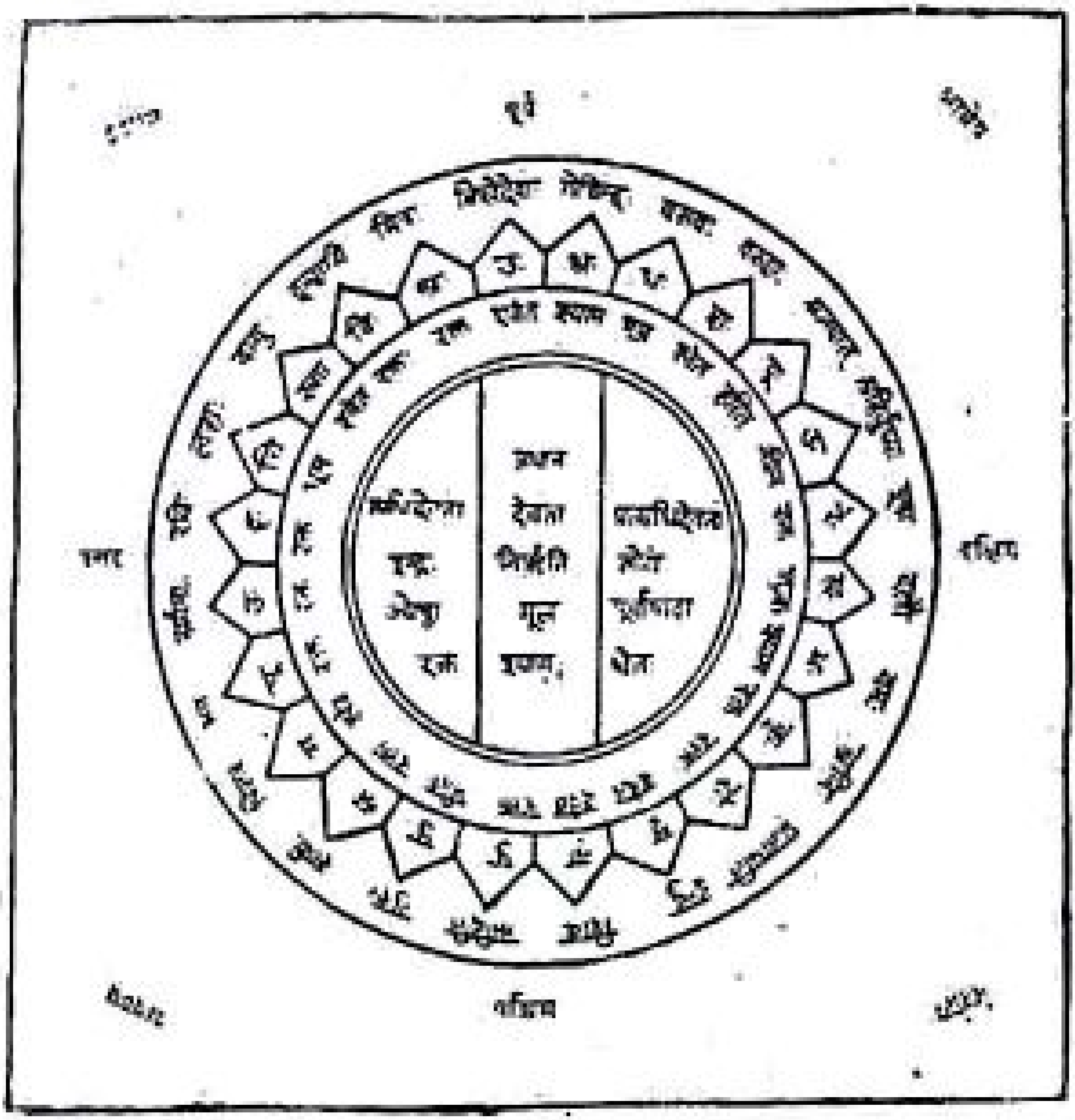
रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्गसमुद्भवे ॥
कोणेन्दुस्त्रिपदैः श्वेतास्त्रिपदैः कृष्णशृङ्खला: ॥१॥
वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ॥
भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥२॥
शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात्पञ्चपदां सिताम् ॥
पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥३॥
शिरसि शृङ्खलायाश्च कुर्यात्पीतं पदत्रयम् ॥
लिङ्गानां स्कन्धतः कोष्ठाः विंशतिः रक्तवर्णकाः ॥४॥
परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृता ॥
पदैस्तु नवभिः पश्चाद्रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥५॥

सर्वतोभद्रचक्रम्

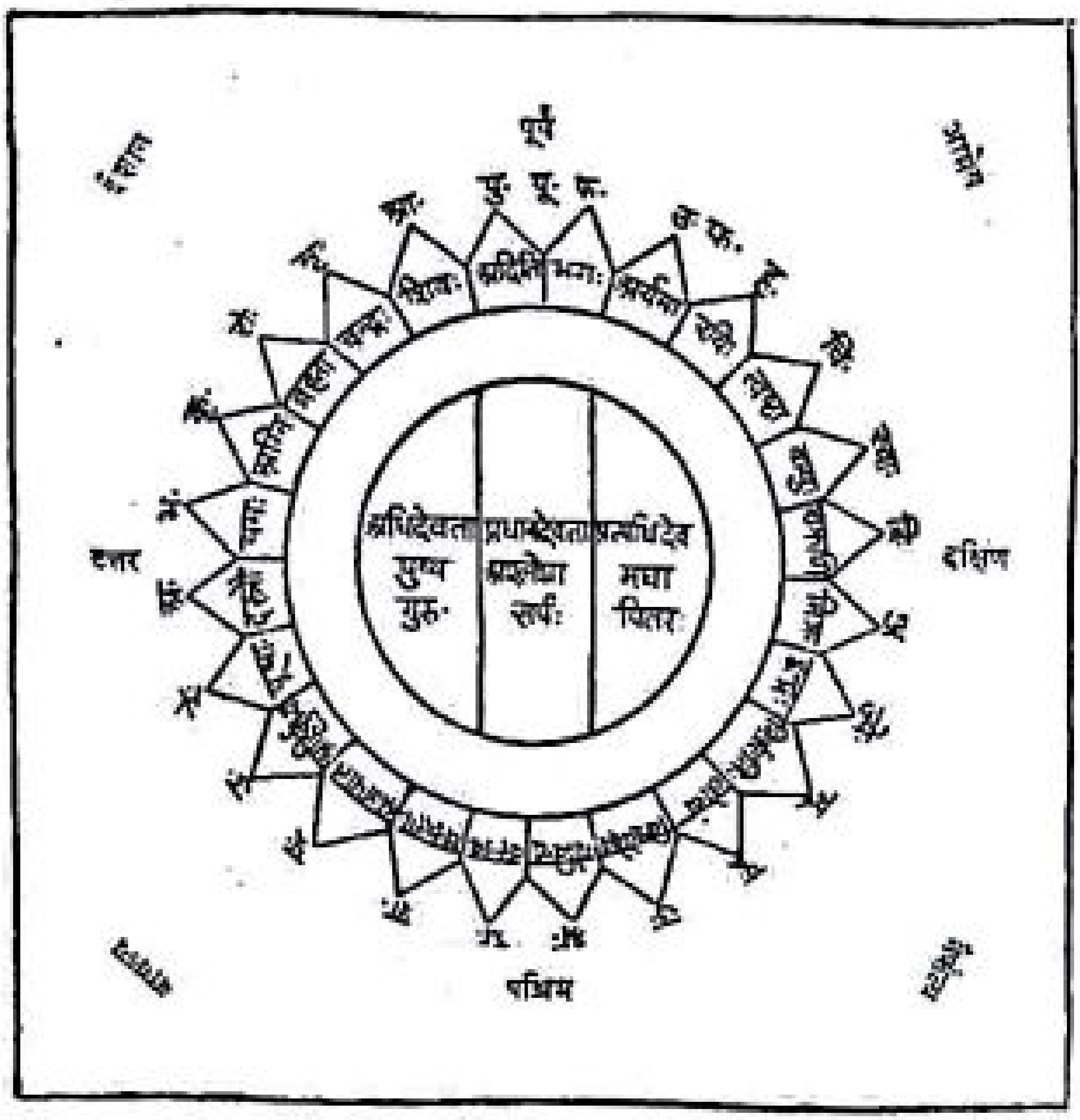


प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिः ॥
खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतपञ्चभिः कृष्णशृंखला: ॥१॥
नीलैकादशवल्ली तु भद्रं रक्तं पदैः नव ॥
चतुर्विंशतिसिता वापी परिधिः पीतविंशतिः ॥२॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥
परिध्या वेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वं रजस्तमः ॥
तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥३॥

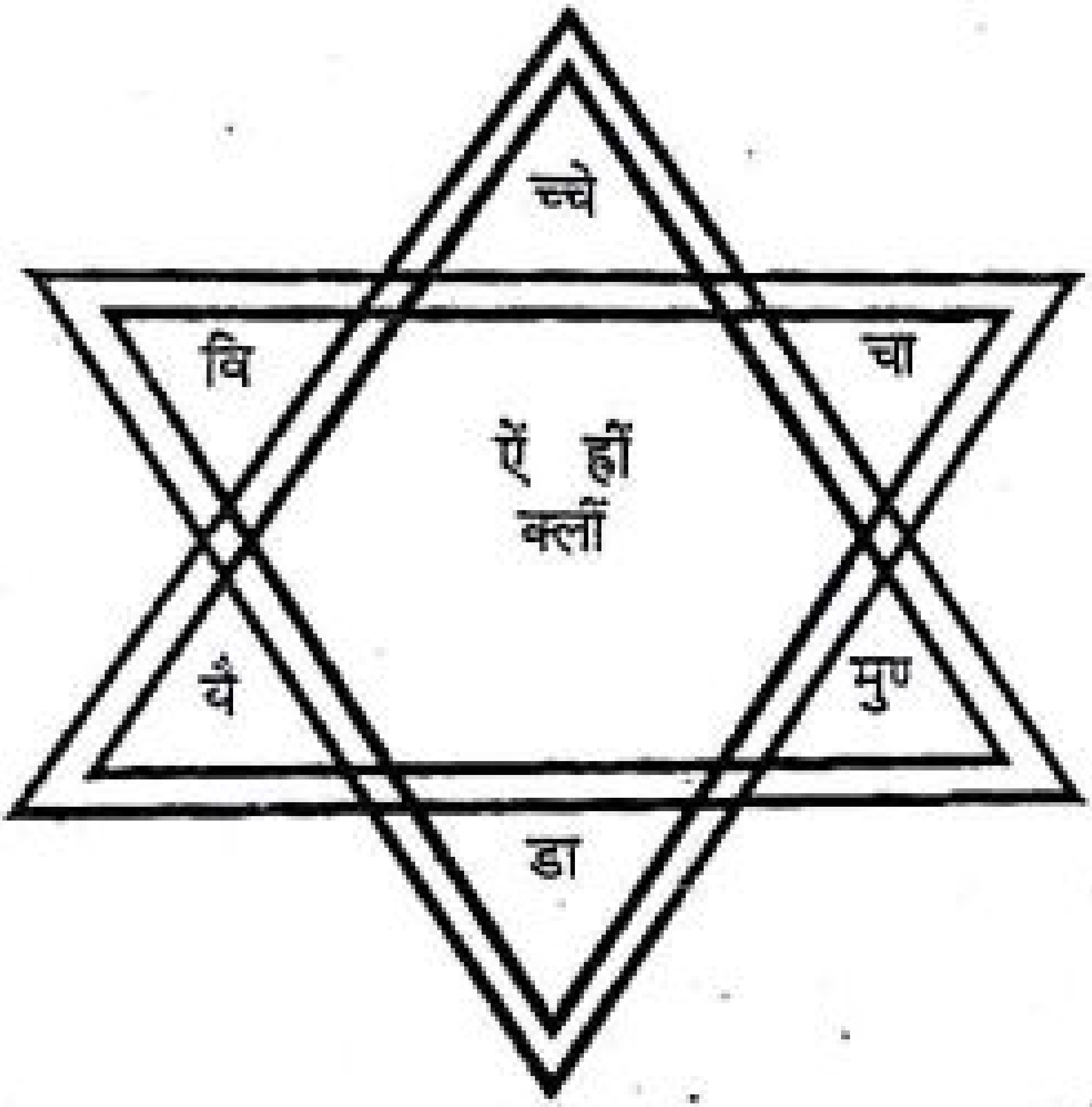
मूलशान्तिचक्रम्

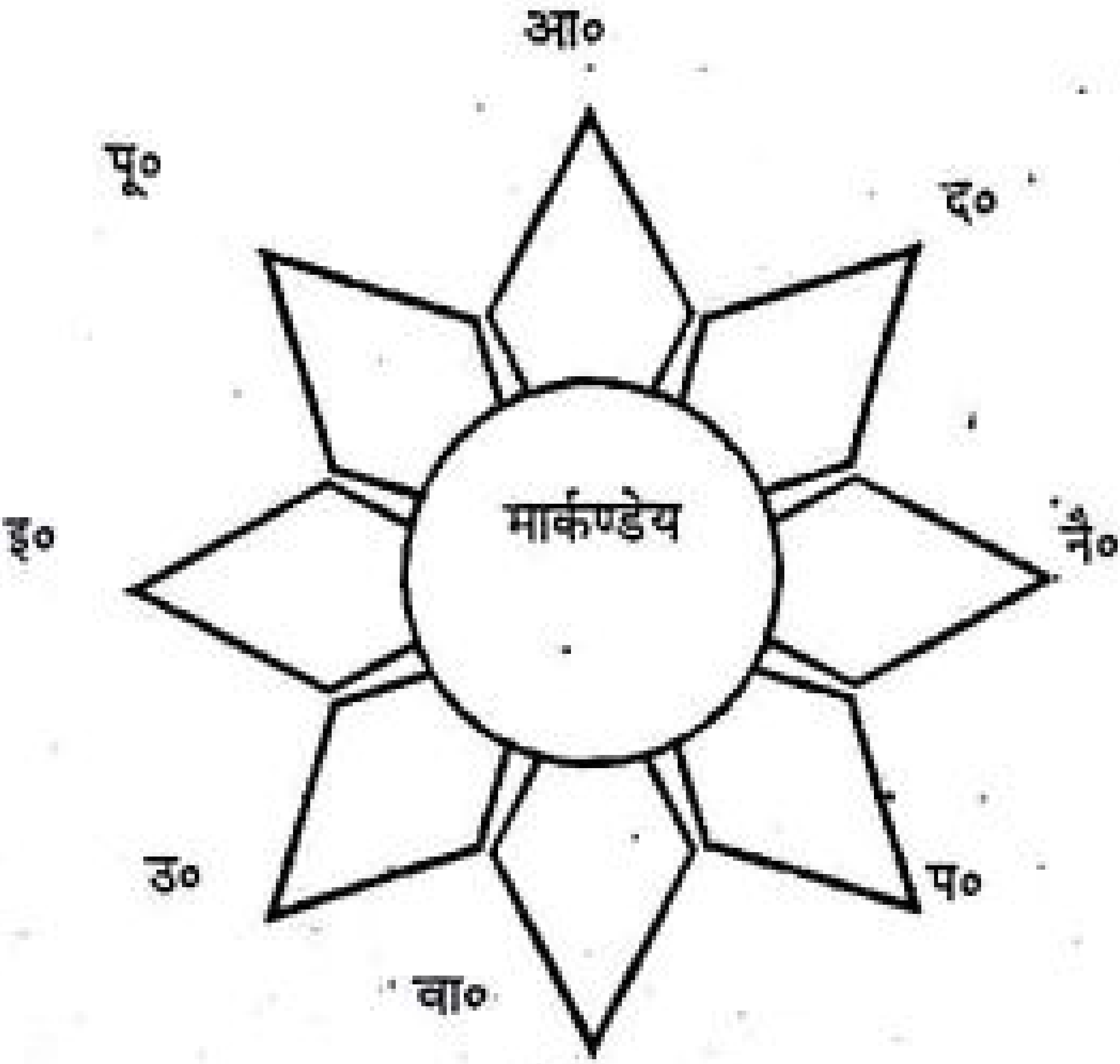


आश्लेषाशान्तिचक्रम्

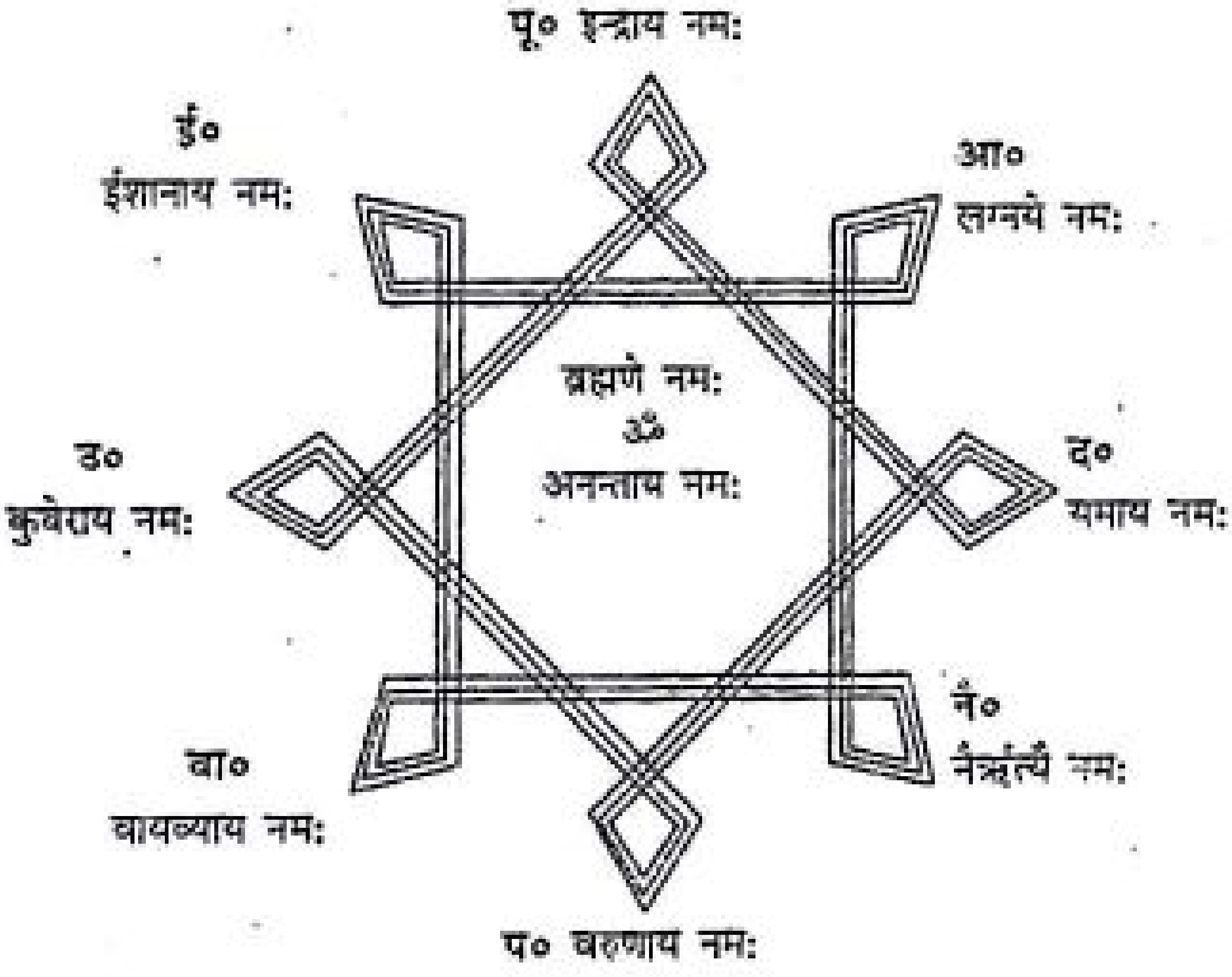


चण्डीको यन्त्र

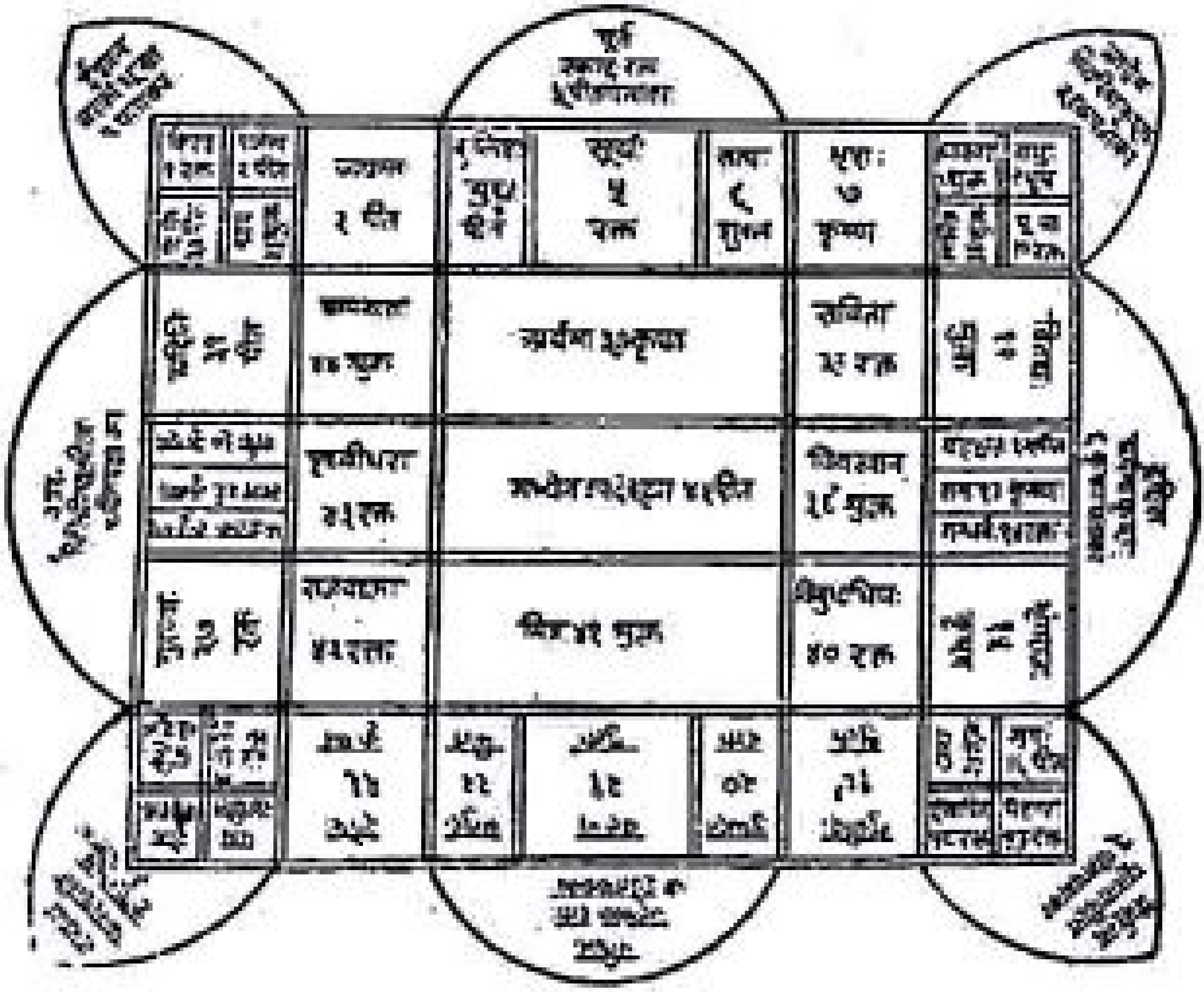



आ०
पू०
द०
मार्कण्डेय
इ०
नै०
उ०
प०
वा०

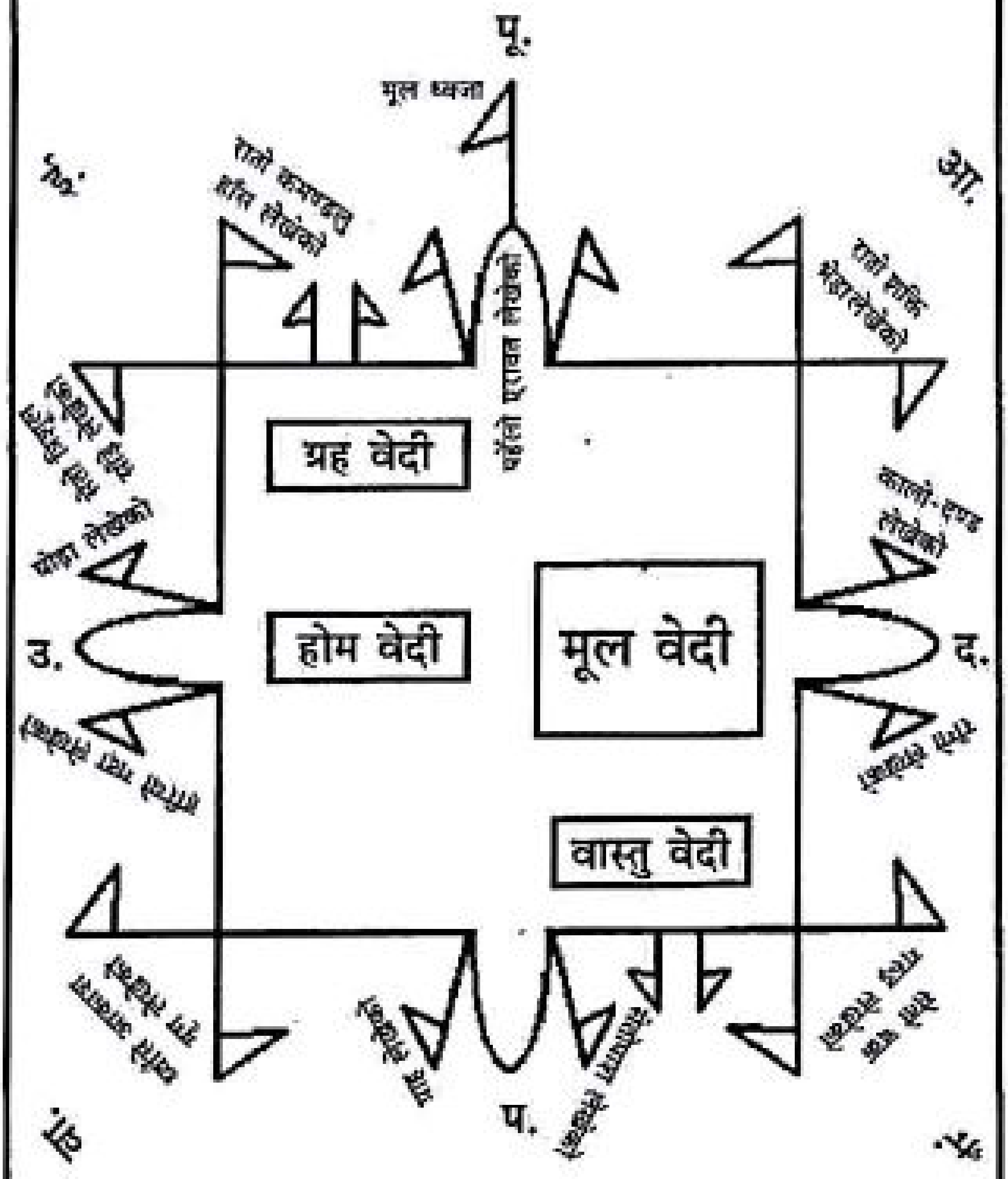
सत्यनारायणको पूजा वा अरू कुनै पूजा लगाउँदा तल बनाएको अष्टदल लेखेर पूजा गर्नु



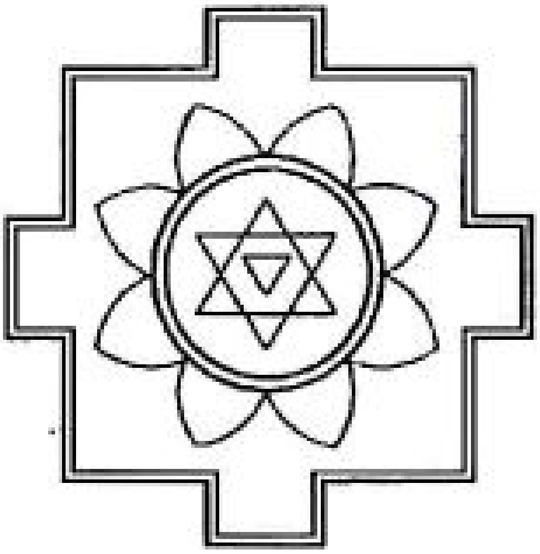
वास्तुदेवतास्थापनक्रमः



मण्डप चक्र



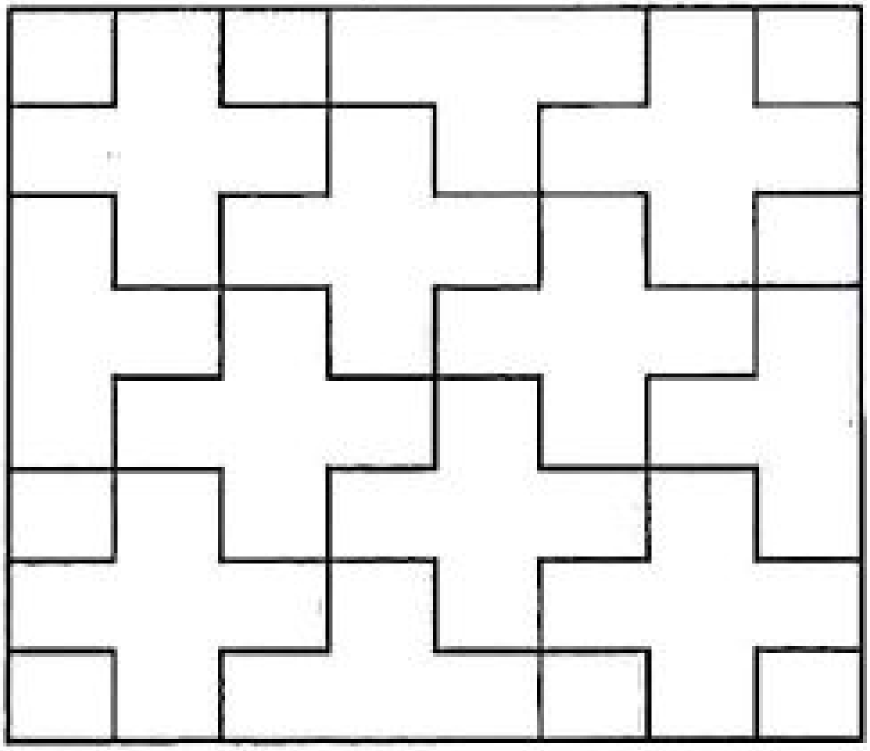
तान्त्रिक होम चक्र



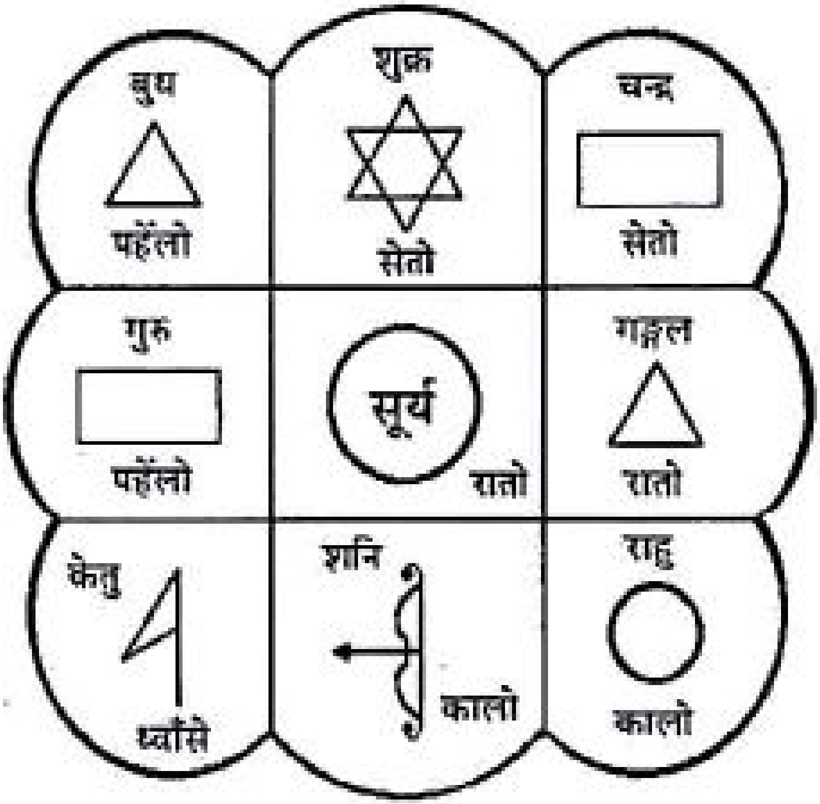
चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्र

		ह	रा	रा	रा	का	का	का	का	का	रा	रा	रा	ह		
	का	ह	ह	रा	प		का	का	का		प	रा	ह	ह	का	
ह	ह	का	ह	ह				का				ह	ह	का	ह	ह
रा	ह	ह	का	ह	ह		का	का	का		ह	ह	का	ह	ह	रा
रा	रा	ह	ह	प	प	का	का	का	का	का	प	प	ह	ह	रा	रा
रा	प		ह	प	रा	रा	रा	का	रा	रा	रा	प	ह		प	रा
का				का	रा	प	प	प	प	प	रा	का				का
का	का		का	का	रा	प				प	रा	का	का		का	का
का	का	का	का	का	का	प				प	का	का	का	का	का	का
का	का		का	का	रा	प				प	रा	का	का		का	का
का				का	रा	प	प	प	प	प	रा	का				का
रा	प		ह	प	रा	रा	रा	का	रा	रा	रा	प	ह		प	रा
रा	रा	ह	ह	प	प	का	का	का	का	का	प	प	ह	ह	रा	रा
रा	ह	ह	का	ह	ह		का	का	का		ह	ह	का	ह	ह	रा
ह	ह	का	ह	ह				का				ह	ह	का	ह	ह
	का	ह	ह	रा	प		का	का	का		प	रा	ह	ह	का	
		ह	रा	रा	रा	का	का	का	का	का	रा	रा	रा	ह		

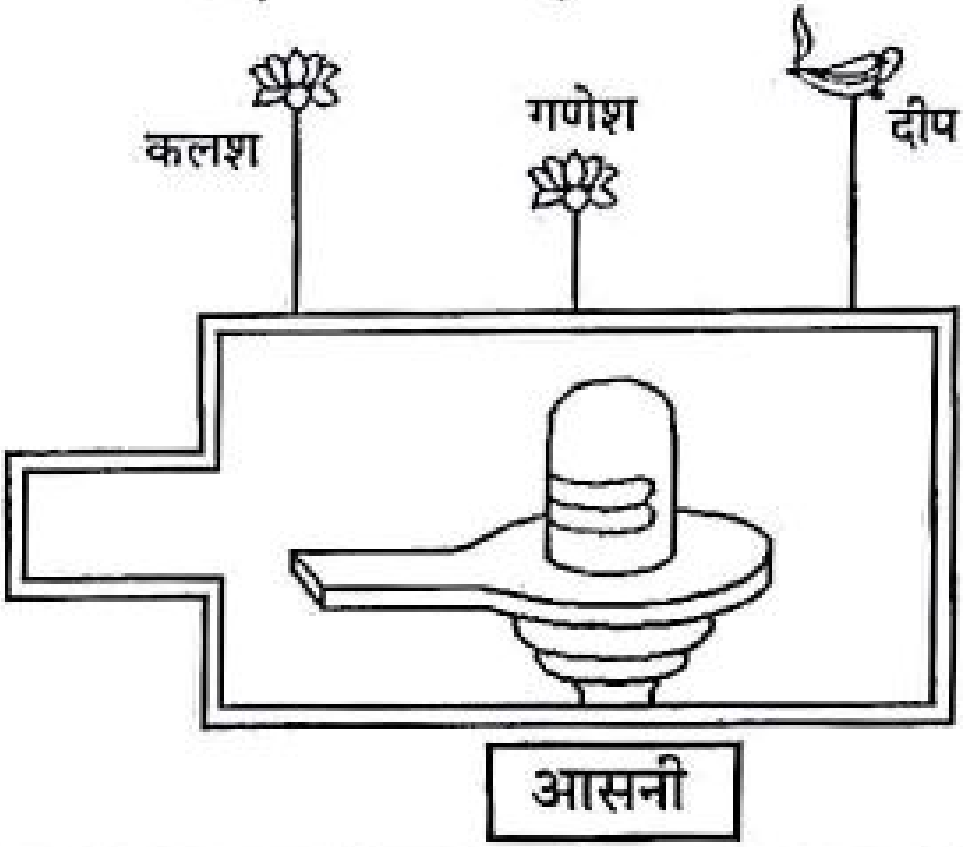
भद्रासन चक्र



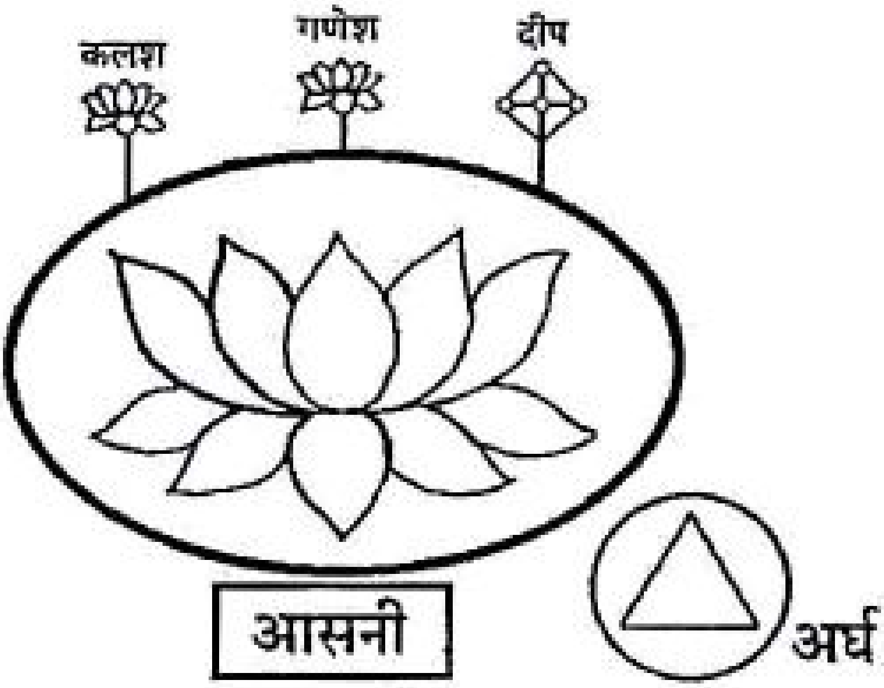
नवग्रह चक्र



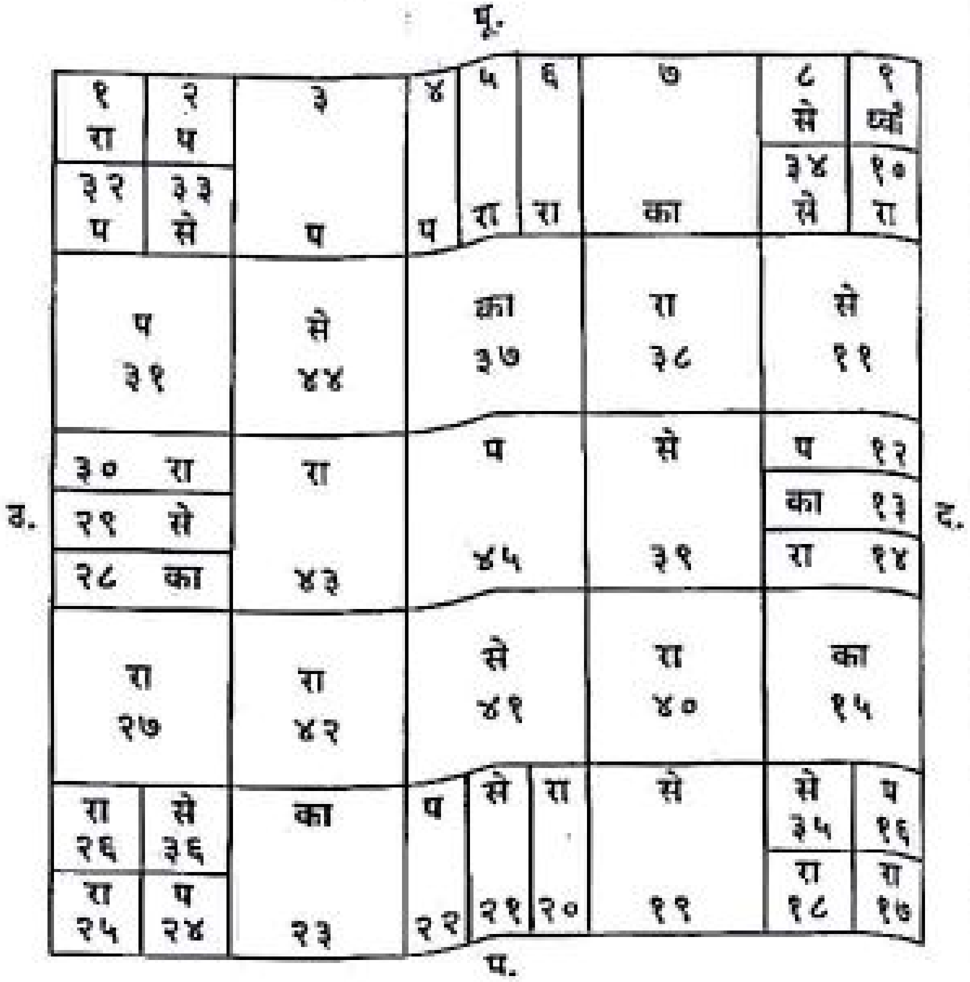
रुद्रीमा रेखी हाल्ने चक्र



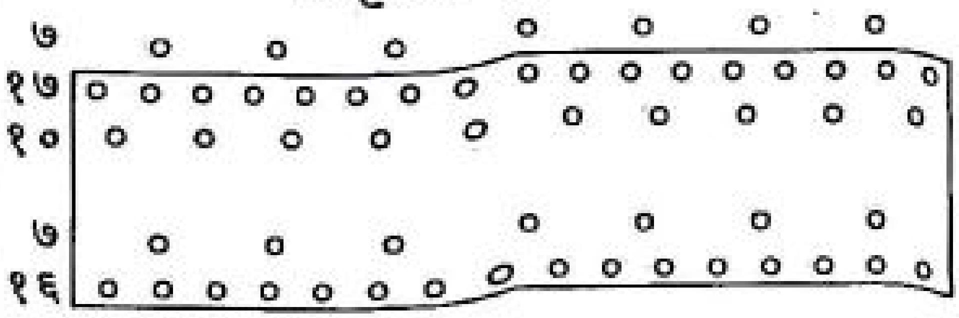
सर्व पूजाको चक्र



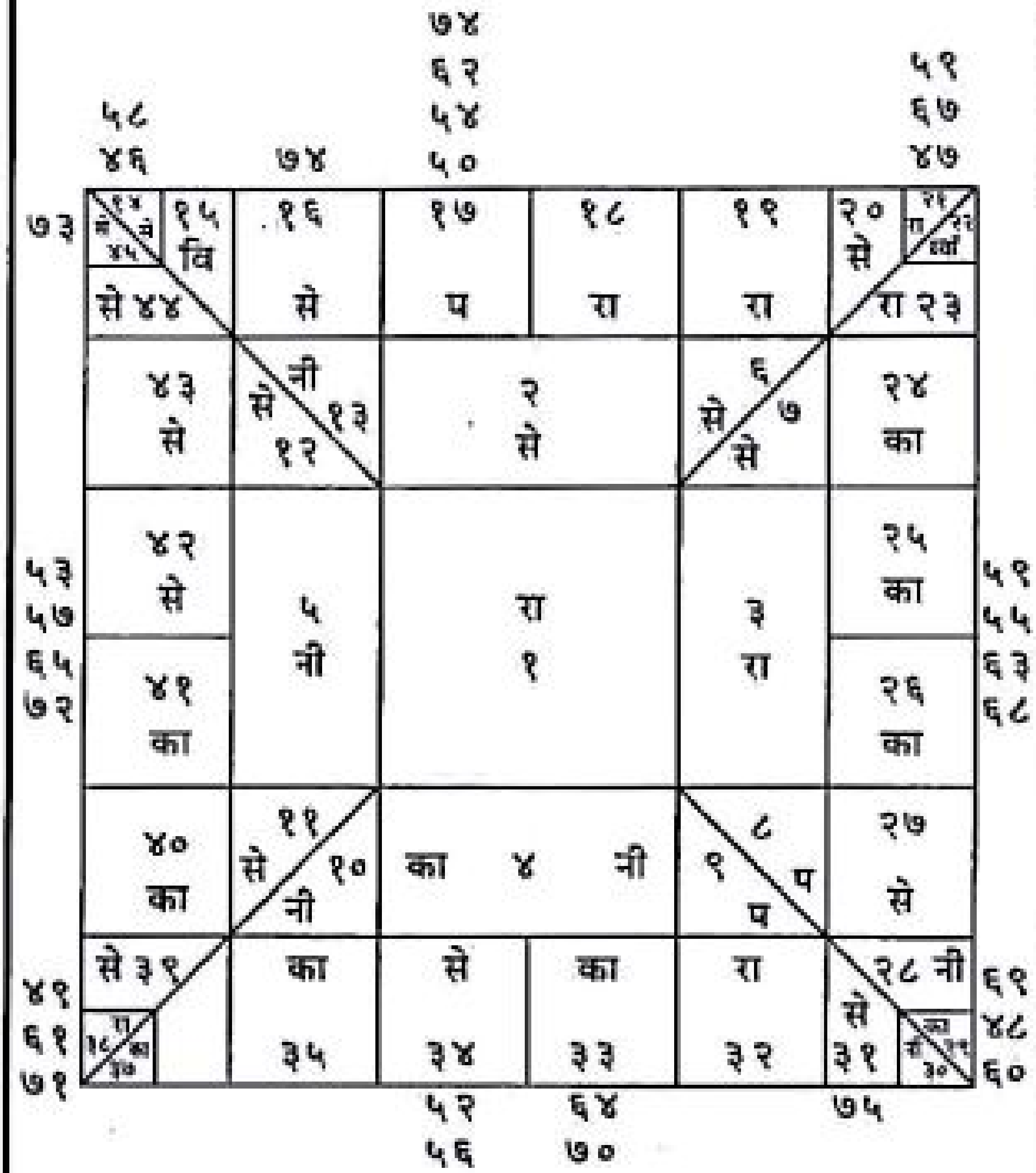
गृहवास्तु चक्र



मातृका पूजा चक्र

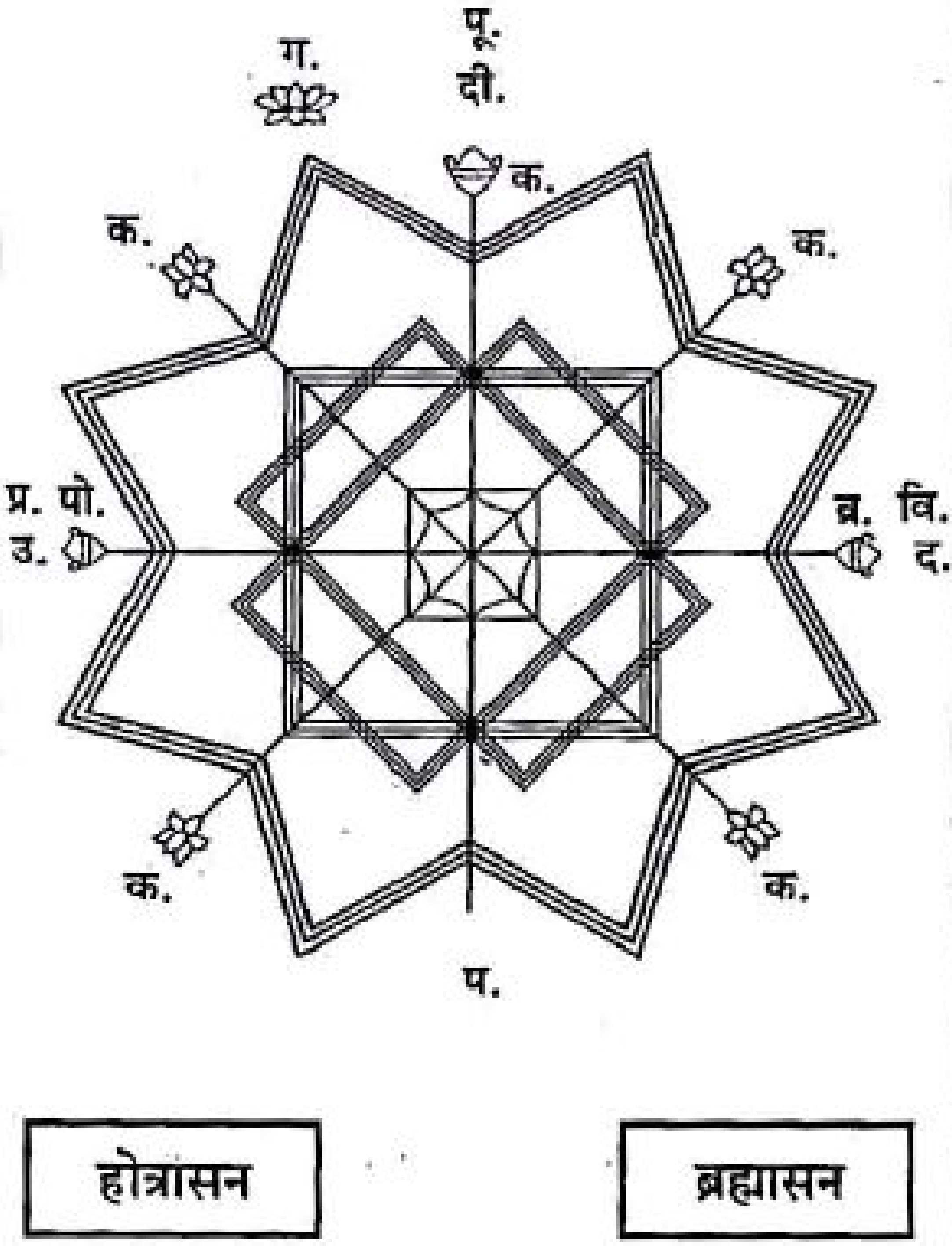


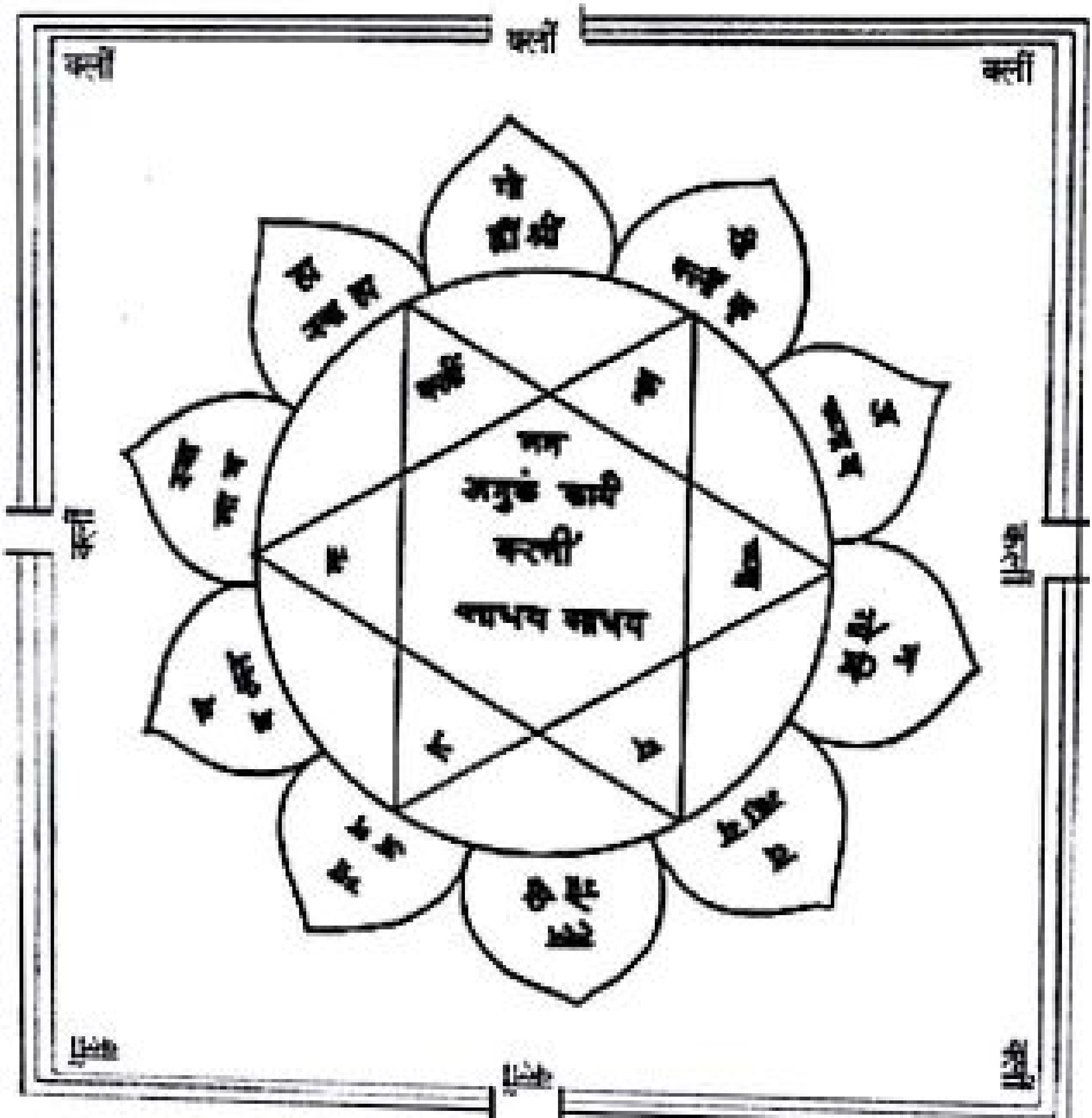
मण्डप वास्तु चक्र



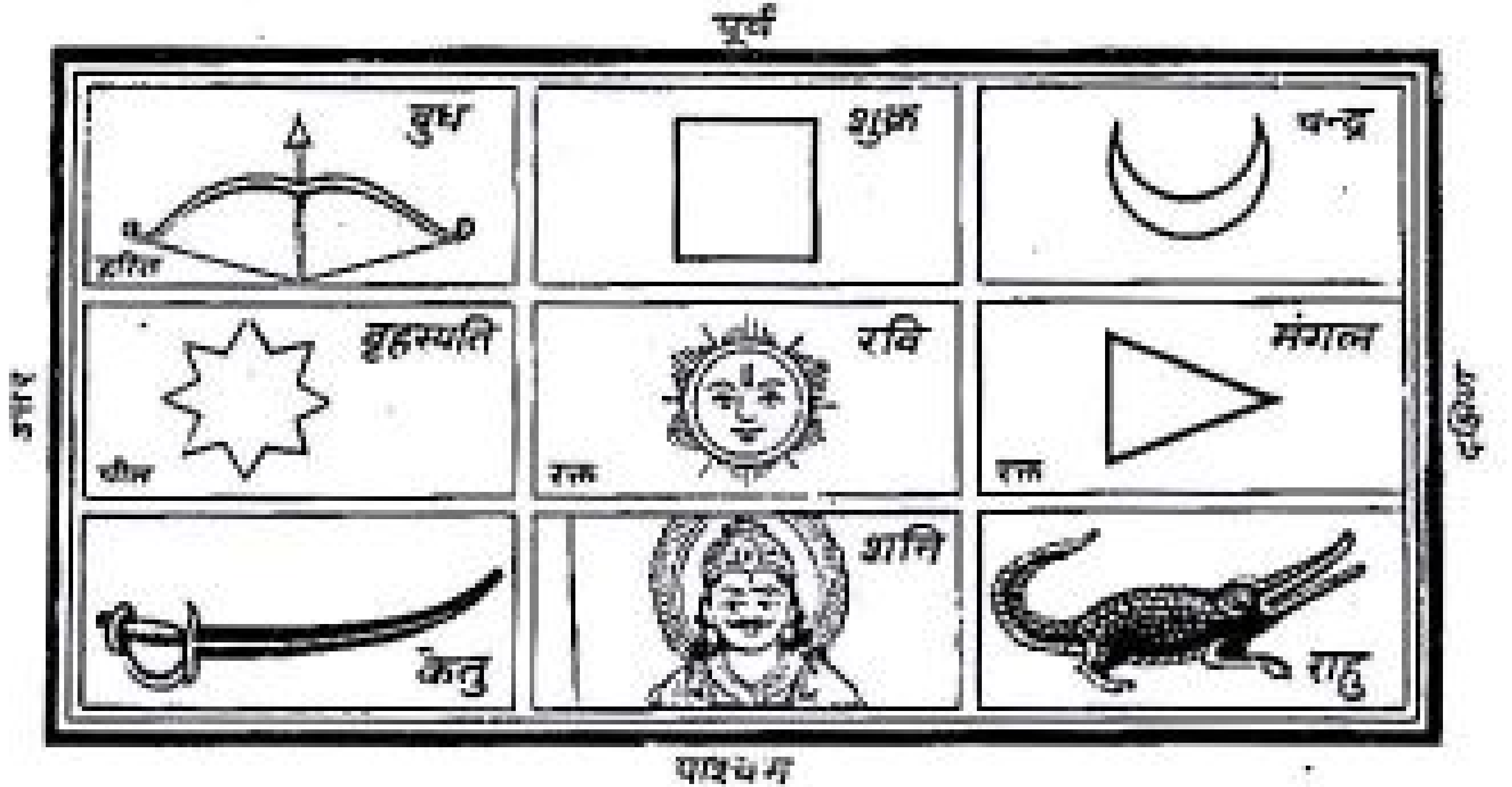
७४
६२
५४
५०
५८
४६
७४
५९
६७
४७
७३
१५ वि
से ४४
१६ से
१७ प
१८ रा
१९ रा
२० से
रा २३
४३ से
नी से १३ १२
२ से
६ से ७ से
२४ का
४२ से
४१ का
५ नी
रा १
३ रा
२५ का
२६ का
५३
५७
६५
७२
५९
५५
६३
६८
४० का
११ से १० नी
का ४ नी
८ ९ प प
२७ से
से ३९
का ३५
से ३४
का ३३
रा ३२
२८ नी
से ३१
४९
६१
७१
६९
४८
६०
५२
५६
६४
७०
७५

वैदिक होमको चक्र



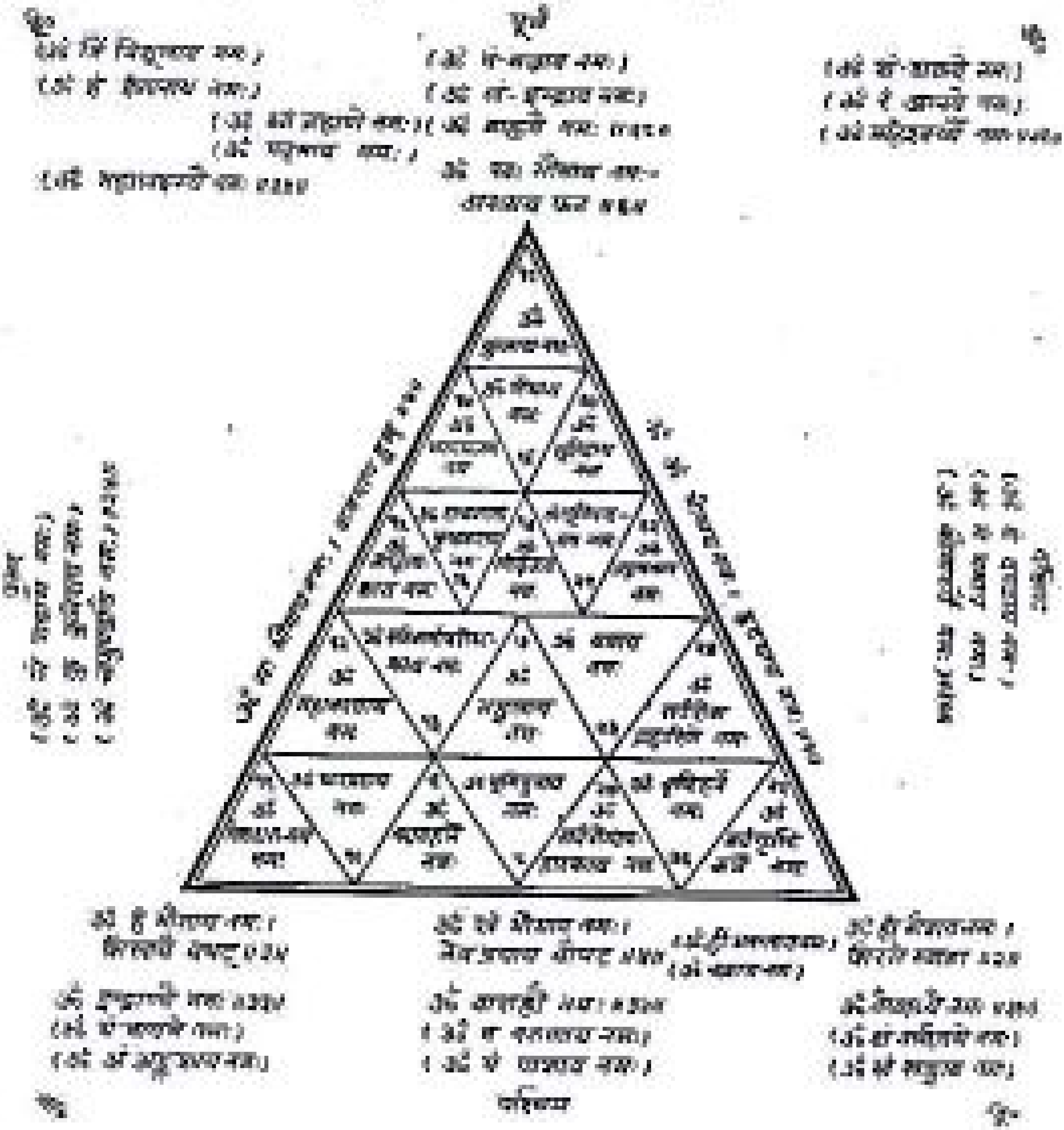

क्लीं
क्लीं
क्लीं

नवग्रह-मण्डलं चक्रम्

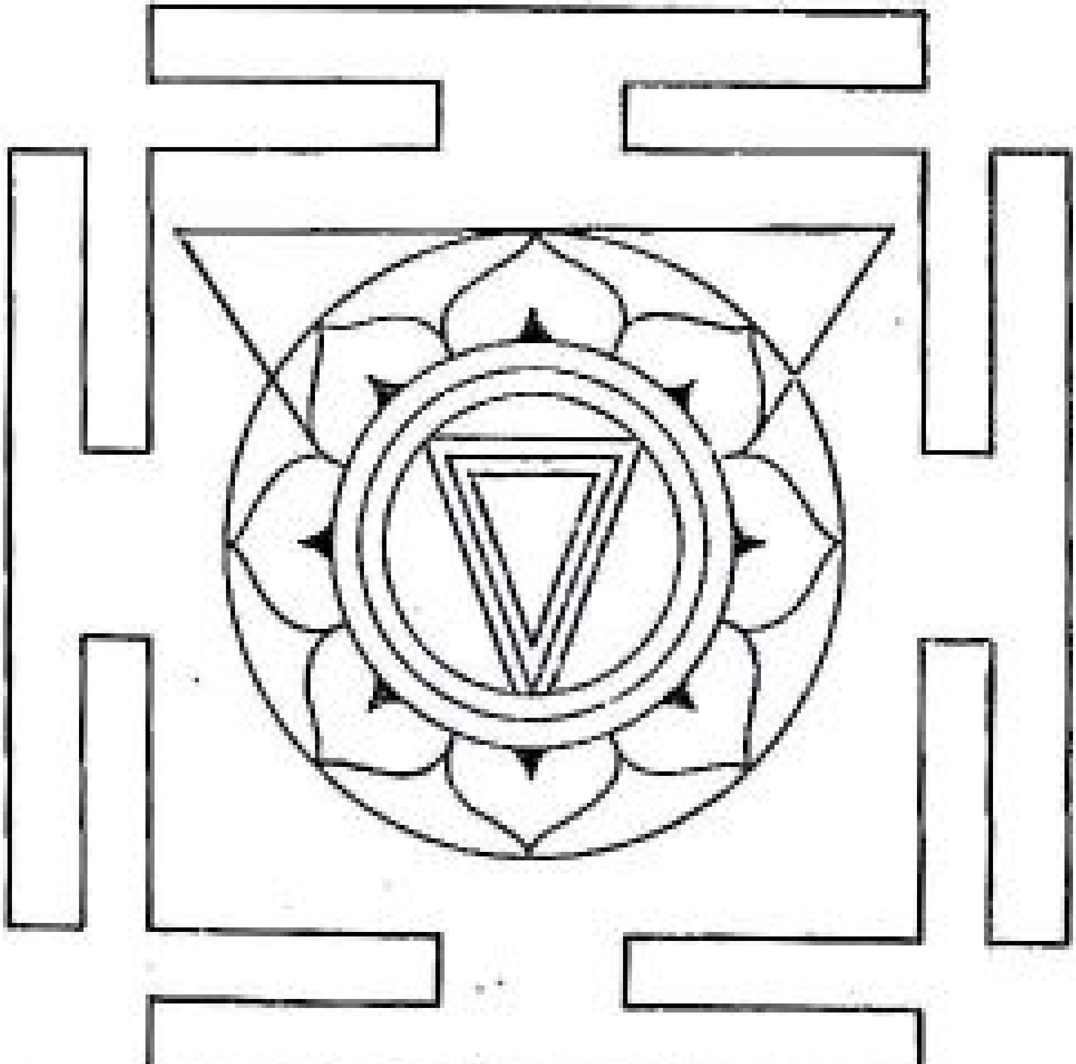


स्कन्दपुराणे–शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ, गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ। प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः, शेषाःदक्षिणतोमुखाः।।१।।
आदित्याऽभिमुखाः सर्वे, साधिप्रत्यधिदेवताः। स्थापनीया मुनिश्रेष्ठाःनान्तरेण पराङ्मुखाः।।२।।

मङ्गल (भौम) पूजनयन्त्रम्



• कालीयन्त्रम् •



अथ श्री काली ध्यानम् ।। शवारूढां महाभीमां, घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।। चतुर्भुजां खंगमुण्डवराभयकरां शिवाम् ।।१।। मुण्डमाला धरां देवीं ललजिह्वां दिगम्बराम् ।। एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानाल–यवासिनीम् ।।२।। (शाक्त प्रमोदे)

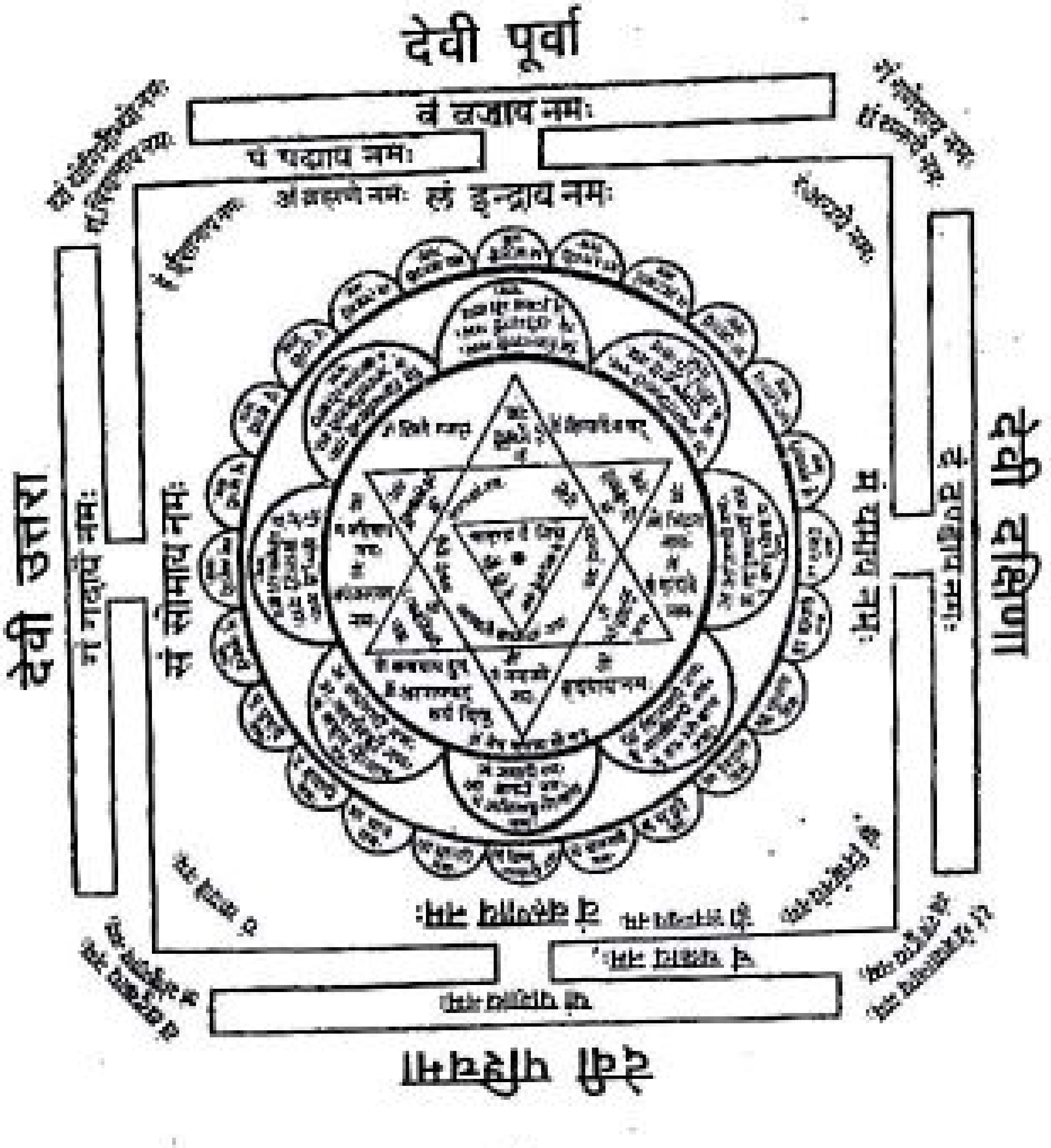
अथ यन्त्रोद्धारः :—आदौ त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणं तद्बहिर्लिखेत् ।। ततो वै विलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयमुत्तमम् ।।१।। ततस्त्रिकोणमालिख्य लिखेदष्टदलं ततः ।। वृत्तं विलिख्य विधिवल्लिखेद्भूपुरमेककम् ।।२।।

अथ मन्त्रोद्धारः —कालीबीजत्रयं प्रोक्त्वा, लज्जाबीजद्वयं ततः ।। हूँकारौ ह्रीं ततः पश्चाद् दक्षिणे कालिके ततः ।।१।। कालीबीजत्रयं तस्मात्, लज्जाबीजद्वयम्पठेत् ।। ह्रीं च स्वाहान्त–हूङ्कारौ कालीमन्त्र उदाहृतः ।।२।।

अथ मन्त्रः

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणे कालिके क्रीं ३ ह्रीं २ हूँ २ स्वाहा ।।

सप्तशतिपूजन- यंत्रम्

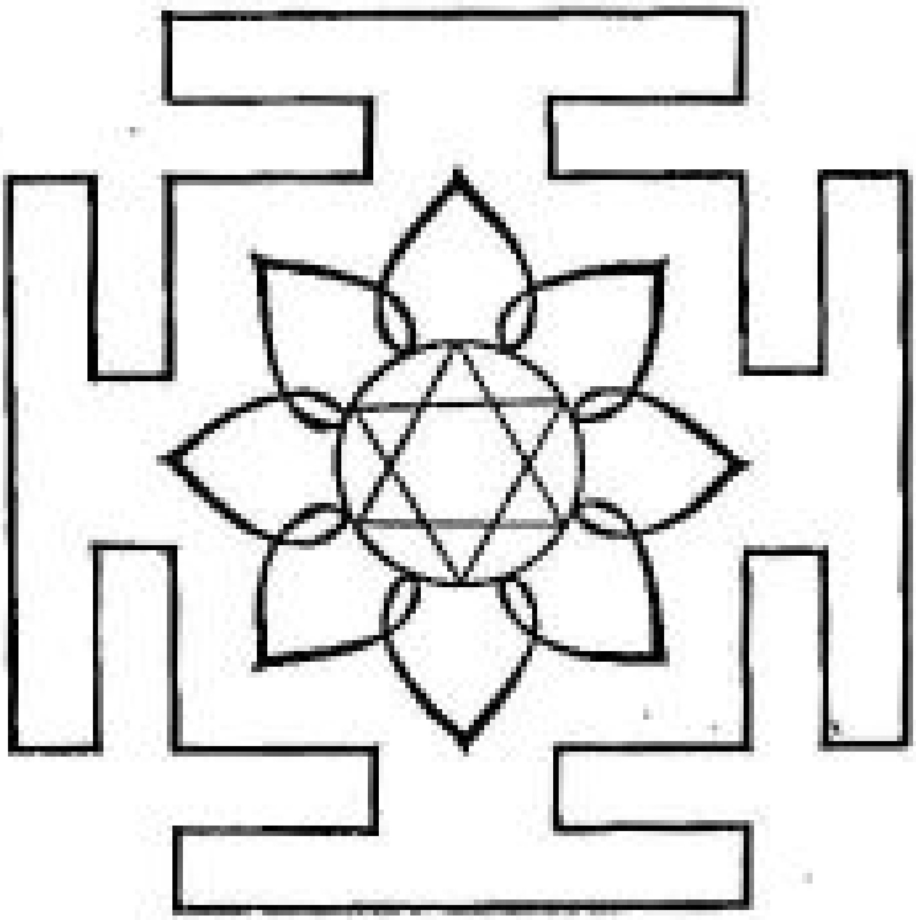


प्रणवं सर्वत्रादौ पठेत्।

नोट—वाम भाग में 'ॐ मं महिषाय नमः' बनाना और दक्ष—भाग में 'ॐ सिं सिंहाय नमः' बनाना।

मन्त्रमहोदधिः १८ तरंगे, श्लोक—१४८ तः १५७ पर्यन्तम्।

शिव यन्त्रम्



अथ शिव–ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभञ्चारु चन्द्रावतन्सं, रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसान, विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम।।१।। (शाक्त प्रमोदे)

अथ यन्त्रोद्धारः

अनुक्तकल्पे यन्त्रन्तु, लिखेत्पद्मदलाऽष्टकम्।। षटकोणकर्णिकन्तत्र, वेदद्वारोपशोभितम्।।१।।

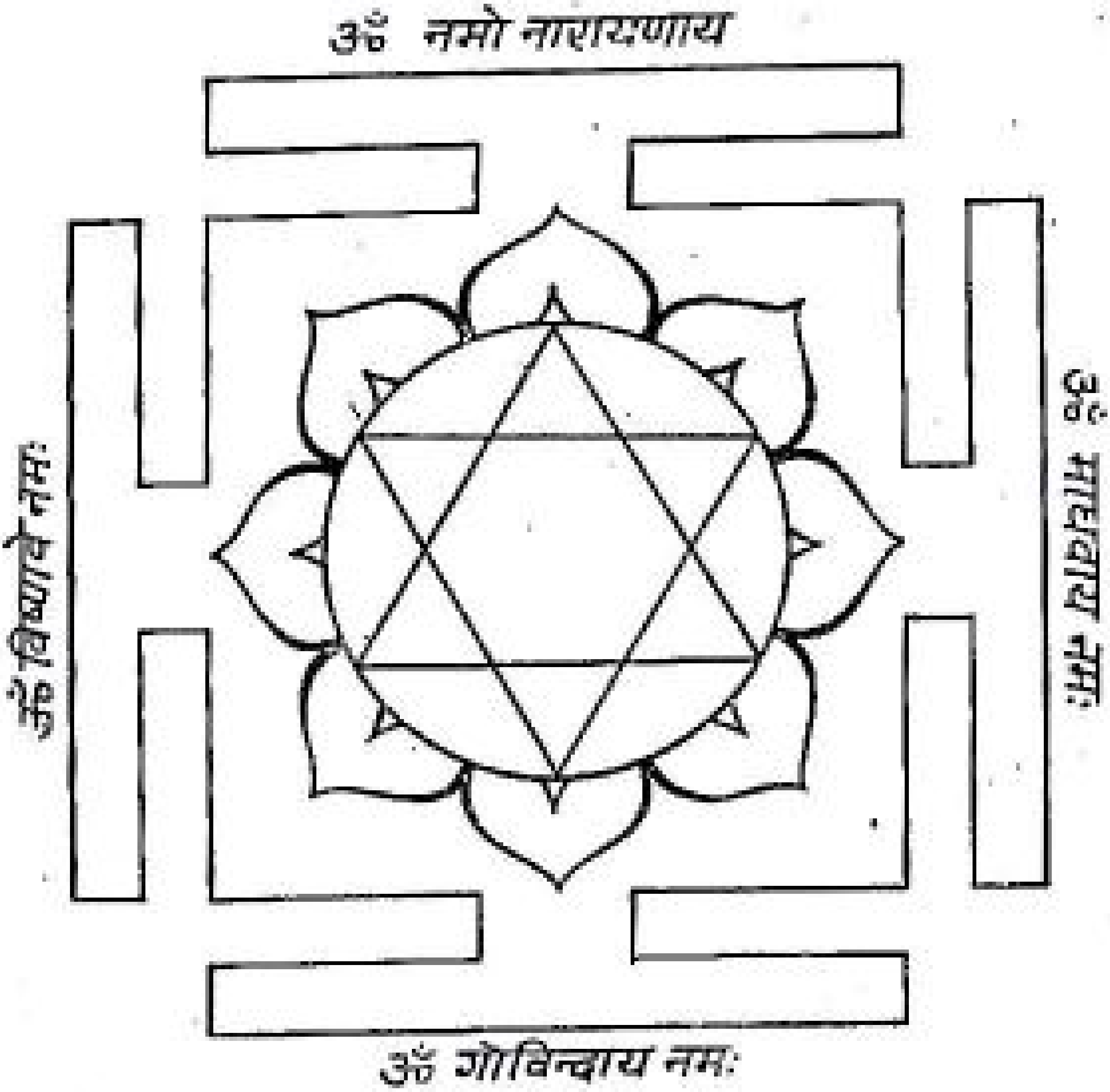
अथ मन्त्रोद्धारः

नमस्कारं समुद्धृत्य, वाऽन्तं नेत्रसमन्वितम्।। वारुणं मुखवृत्तञ्च वायुं ललाटसंयुतम्।। अमुम्पञ्चाक्षरम्मन्त्रं, पञ्चकामफलप्रदम्।। प्रणवादिर्य्यदा देवि ! तदा मन्त्रः षडक्षरः।। इति।।

अथ मन्त्रः

ओन्नमश्शिवाय।। (शाक्त प्रमोदे)

• विष्णु यन्त्रम् •



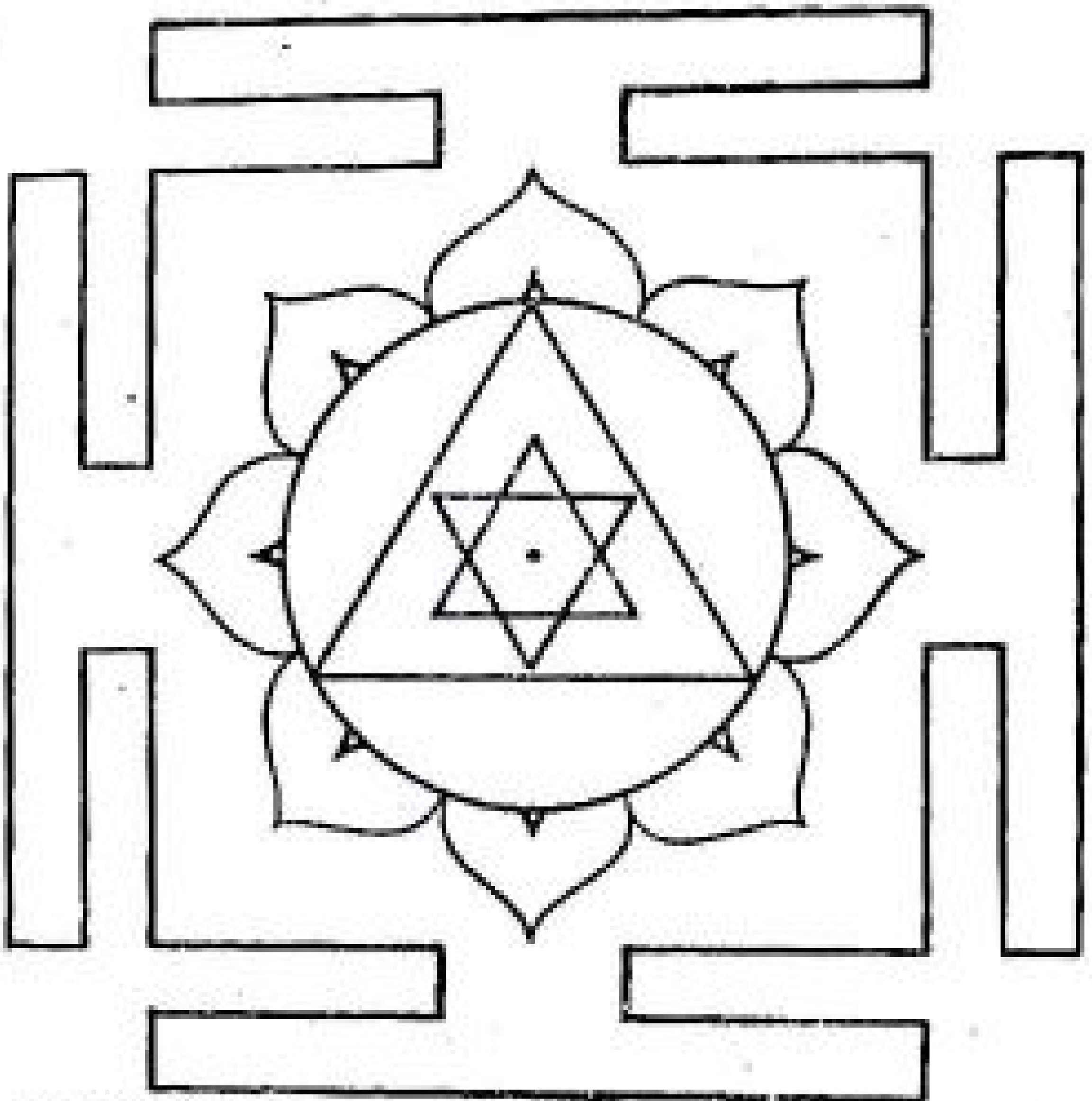
अथ श्री विष्णु ध्यानम्–शान्ताकारं भुजगशयनं प्रद्मनाभं सुरेशम्, विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

अथ यन्त्रोद्धारः–अनुक्तकल्पे यन्त्रन्तु, लिखेत्पद्मदलाष्टकम्। षट्कोणकर्णिकन्तत्र, वेदद्वारोपशोभितम्।।१।।

अथ मन्त्रोद्धारः–सचतुर्थी नमोऽन्तैश्च, नामभिर्विन्यसेत्सुधीः।तारन्नमः पदं ब्रूयात्ततो दीर्घसमन्वितौ। पवनोणाय मन्त्रोऽयं प्रोक्तो वस्वक्षरः परः।।

अथ मन्त्रः–ॐ नमो नारायणाय।

• गणेश यन्त्रम् •



अथ श्रीगणेश ध्यानम्:—उर्ध्वैर्ब्रह्माण्डखण्डद्वितयसहचरं कुम्भ-युग्मं दधानं, प्रेंखं नागारिपक्षप्रतिभटविकटश्रोततालाऽभिरामम्। देवं शम्भो-रपत्यं भुजगपतितनुस्पर्धिवर्धिष्णुहस्तं, ध्याये पूजार्थगीशं गणपतिममलं धीश्वरं कुञ्जरास्यम्।।१।

अथ यन्त्रोद्धार:

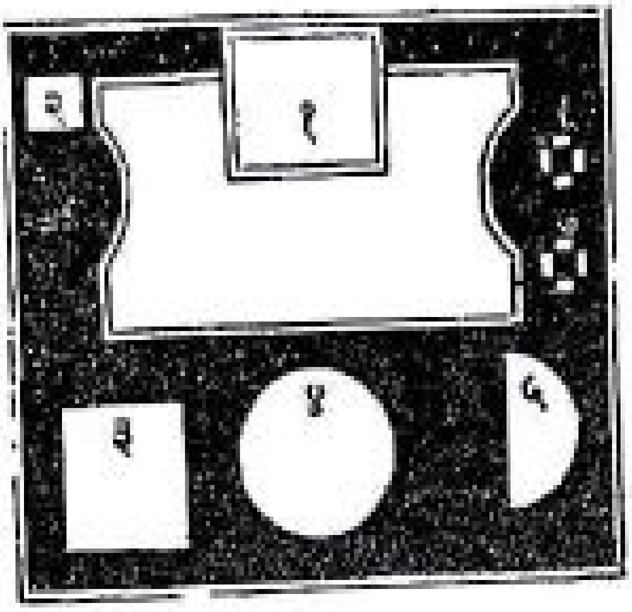
षट्कोणञ्च त्रिकोणञ्च, तद्बहिः अन्यत्सर्वं मातृकायन्त्रवत्।

अथ मन्त्रोद्धार:—श्रीशक्तिस्मरभूविघ्नबीजानि प्रथमं वदेत्। ङेऽन्तं गणपतिं पश्चाद्वरान्तो वरद परम्।। उक्त्वा सर्वजनं मेऽन्तो वशमानय ठः द्वयम्। अष्टाविंशत्यक्षरोऽयन्तारायोमनुरीरितः।।

अथ मन्त्र:— ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय ठः ठः।। (शाक्त प्रमोदे)

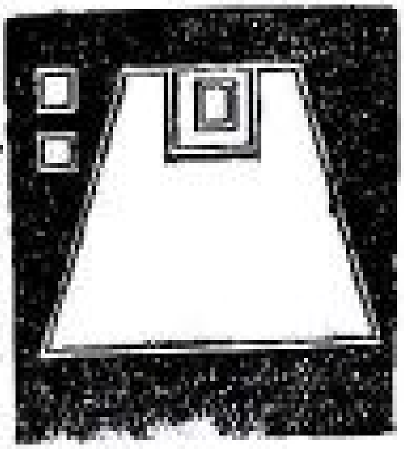
१ आहवनीयकुण्डम्. ६ ब्रह्मासनम्. २ स्मार्तकुण्डम्.

२ आवसथ्यकुं.



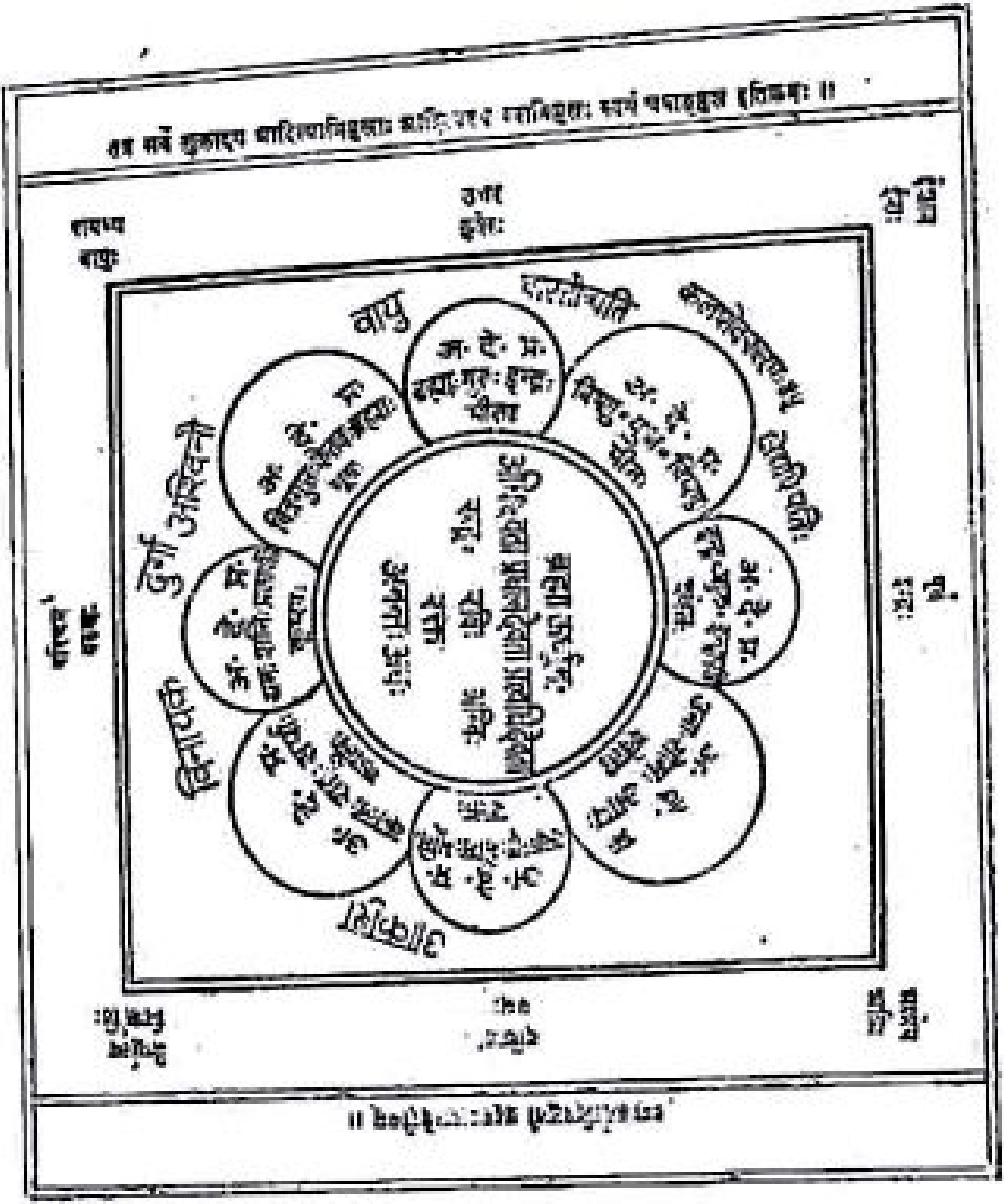
३ सभ्यकुंडम्.

७ यजमानासनम्



४ गार्हपत्यकुण्डम्.

५ दक्षिणाग्निकुण्डम्.



उत्तर
कुबेरः
वायु

